2

अब्राहम-उद्धार का आरम्भ

(उत्पत्ति 12 और 15)

आमतौर पर यह कहा जाता है कि ''एक के महत्व को कभी कम न जानें।'' यह कहावत निश्चित रूप से बाइबल के विवरण में लागू होती है, क्योंकि परमेश्वर कभी एक व्यक्ति के महत्व को नज़रअन्दाज़ नहीं करता। मनुष्यजाति का आरम्भ केवल एक आदमी, अर्थात आदम की सृष्टि के साथ हुआ। बाद में उत्पत्ति 6 में, मनुष्यजाति की निरन्तरता केवल एक व्यक्ति अर्थात नूह पर निर्भर थी। इस्राएल का मिस्र की दासता से छुटकारा केवल एक व्यक्ति मूसा की अगुआई में हुआ। अन्त में इस्राएल के मसीहा और संसार के उद्धारकर्त्ता का जन्म केवल एक स्त्री (वास्तव में एक युवती जो सम्भवतया अपनी युवा अवस्था में थी) के द्वारा पूरा हुआ।

इसलिए यह आश्चर्यजनक बात नहीं है कि पाप की समस्या का परमेश्वर का समाधान (जो उत्पत्ति 3 में दर्ज घटनाओं से हुआ), एक आदमी के साथ आरम्भ हुआ। वह आदमी अब्राहम था, जिसका नाम किसी समय ''अब्राम'' था।

उत्पत्ति 1-3 संसार की सृष्टि और इसकी मानवीय जनसंख्या के साथ-साथ पाप के मूल का भी वर्णन करती है। अध्याय 4 से 11 दिखाते हैं कि आदम और हव्वा के वाटिका में से निकाले जाने के बाद, स्थिति और बदतर हो गई। इसलिए परमेश्वर ने अब्राहम को अपनी योजना में विशेष माध्यम बनाने के लिए बुलाकर अपनी इच्छा के साथ मेल खाने के लिए अपनी सृष्टि को लाने की सदियों तक चलने वाली प्रक्रिया आरम्भ कर दी। इस बुलाहट को उत्पत्ति 12 और 15 में दर्ज किया गया है।

अब्राहम तीन ''महान पुरखाओं'' अर्थात अब्राहम, उसके पुत्र इसहाक और इसहाक के पुत्र याकूब में सबसे पहला था। ये तीनों 2100-1700 ईस्वी पूर्व के दौरान हुए।

अब्राहम के पोते याकूब के 12 पुत्र थे, जो उस जाति के जिसे ''इस्राएल'' (याकूब का वैकल्पिक नाम; देखें उत्पत्ति 32:28 के रूप में जाना जाता है बारह ''गोत्रों'' के सरदार ''पुरुखा'') हुए। मसीहा यानी यीशु ने अन्त में इस्राएली लोगों (विशेषकर यहूदा के गोत्र) में से आना था। उसने पाप की समस्या का अन्तिम समाधान होना था। इस सब का आरम्भ उस एक आदमी के बुलाए जाने और विश्वास के उसके जवाब से हुआ।

अब्राहम से परमेश्वर की पहली भेंट उत्पत्ति 12:1-4 में मिलती है जहां उसने सबसे पहले उसके साथ अपनी ''वाचा'' बताई। इस वाचा की प्रतिज्ञाएं उत्पत्ति 15:1-6 में दोहराई और अधिक स्पष्ट की गईं। इन दोनों वचनों को देखकर हमें उस उद्धार की प्रकृति की जो आने वाला था, उच्च महत्वपूर्ण अवधारणाएं पता चल सकती हैं।

उद्धार परमेश्वर की योजना के अनुसार होगा

अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा यह स्पष्ट कर देती है कि मनुष्यजाति का उद्धार

मनुष्यजाति की पहल या प्रयास के परिणाम के कारण नहीं होगा। जैसे सृष्टि का आरम्भ पूरी तरह से परमेश्वर पर था, वैसे ही मनुष्यजाति की पुनः सृष्टि में, उस कार्य में पहल करने वाला परमेश्वर ही है। इस प्रक्रिया को ''चयन'' कहा जाता है। परमेश्वर ने अब्राहम और उसकी संतान को चुना (या ''चयन किया'') जिनके द्वारा उसने अपनी इच्छा पर काम करना था। यह चयन अब्राहम की भलाई या सिद्धता पर आधारित नहीं था, जैसा कुछ यहूदी परम्पराओं में दावा किया जाता है। यह देखने के लिए कि अब्राहम पाप रहित होने से कहीं दूर था उत्पत्ति 16-25 ही पढ़ना काफ़ी है। उसने झूठ बोला, अपने विश्वास में ढगमगाया और अपने परिवार का खूब प्रबन्ध किया। नहीं परमेश्वर द्वारा अब्राहम का चुनाव केवल उसके अनुग्रह के कारण था न कि अब्राहम की विशेषता के कारण।

उत्पत्ति 12:2, 3 में परमेश्वर ने व्यापक रूपरेखा में अपनी योजना बनाई। अब्राहम में से एक बड़ी जाति बननी थी, और उस जाति में से उसने आना था जिसने ''पृथ्वी के सब घरानो'' के लिए आशीषित होना था। बाइबल के कुछ अनुवादों में आयत 3 के अन्तिम भाग को इस प्रकार अनुवाद किया गया है: ''... तेरे द्वारा पृथ्वी के सभी परिवार अपने आपको आशीष देंगे'' (RSV)। ESV जैसे अन्य अनुवादों में ''... तुझ में [या द्वारा] पृथ्वी के सारे परिवार आशीष पाएंगे।'' पहली बार पढ़ने का बोध यह है कि अब्राहम का नाम भावी पीढ़ियों (और यहां तक कि इस्राएल के अलावा देशों में) आशीष देने के लिए लिया जाना था। दूसरी बार पढ़ना यह सुझाव देता है कि सब जातियों ने अन्त में अब्राहम के द्वारा आशीष पानी थी; क्योंकि संसार का उद्धारकर्त्ता, यीशु उसकी संतान में से होना था। दोनों अनुवाद व्याकरणीय रूप में सम्भव हैं और किसी सीमा तक सही भी, पर परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक की मंशा से मेल खाने में बाद वाला अनुवाद सम्भवतया अधिक सही है, क्योंकि शेष बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि ऐसा ही हुआ। जो भी हो परमेश्वर की योजना अब्राहम के द्वारा आशीष देना थी। इससे यीशु का आना और हमारे पापों के लिए उसकी मृत्यु और जी उठना चरम तक पहुंच गया।

1 कुरिन्थियों 15:20-28 में पौलुस इसी योजना की बात कर रहा था, जब उसने ''सब बातों'' के परमेश्वर के अधीन होने की बात की। 1 कुरिन्थियों 15:42-50 में उसने इस सच्चाई पर ज़ोर और बढ़ा दिया, जब उसने यीशु को ''अन्तिम आदम'' कहा जिसका आना ''प्रथम आदम'' के द्वारा लाए गए पाप के प्रभाव को बदलने का कारण बना। इसी प्रकार प्रकाशितवाक्य 22:1-5 पाप में गिरने के प्रभावों के अन्त में उलट हो जाने के रूप में अनादिकाल को दिखाता है। स्वर्ग का वर्णन एक वाटिका के शब्दों में ''जीवन के वृक्ष'' के साथ पूरा होता है जिस तक एक बार फिर सबकी पहुंच होती है।

समय का बाइबली विचार एकघाती है। सरल रूप में इसका अर्थ यह है कि समय का आरम्भ हुआ था (सृष्टि के समय) और निश्चित रूप से इसका एक अन्त होगा (यीशु के दोबारा आने पर)। बहुत से धर्म समय का दार्शनिक रूप दिखाते हैं। इस अवधारणा के अनुसार कोई आरम्भ या अन्त नहीं है; सब कुछ चक्रों में चलता रहता है। इसके केन्द्र में यह अधिक समय का आशावादी विचार है, जबकि बाइबल के विचार से तुलना करने पर दृश्य में कुछ भी वास्तविक बदलाव नहीं आ सकता। यह पाप, मृत्यु और दुख का अन्त नहीं हो सकता, केवल उन्हीं बातों का बार-बार रूप बदलना है। समय के बाइबली या एकघाती विचार से हर बात एक बड़े चरम

और परमेश्वर से मिलन की ओर जा रही है, जिसने हम सब को बनाया। इसका अर्थ यह है सब कुछ समय की धारा में फंसा हुआ है और अनन्तकाल की ओर जा रहा है, चाहे वह मसीह के द्वारा अनन्त जीवन की ओर हो या उसके बिना अनन्त विनाश की ओर।

उद्धार एक वाचा पर आधारित होगा

उत्पत्ति 12 में परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक वाचा बांधी। ''वाचा'' प्रतिज्ञाओं के साथ किया गया समझौता होता है। दो जन आपस में एक वाचा बांध सकते हैं, जैसे विवाह की वाचा। परन्तु बाइबल में मनुष्यजाति के साथ वाचा बांधने की शुरुआत हमेशा परमेश्वर ने की, जिसने शर्तें रखीं और जिसने आशिषें देने की प्रतिज्ञाएं कीं। मनुष्य का योगदान केवल उस वाचा की शर्तों पर विश्वास करना और आज्ञा मानना था। जब परमेश्वर कोई वाचा बांधता है तो यह ''लोगों के बीच समझौता'' नहीं हो सकता। अब्राहम के साथ अपनी वाचा में परमेश्वर ने प्रतिज्ञाएं देने की पेशकश की और अब्राहम को निर्णय लेना था कि वह उस वाचा की शर्तों को मानेगा या उन्हें ठुकराएगा।

वाचा में पांच प्रतिज्ञाएं दी गईं थीं:

1. परमेश्वर अब्राहाम को एक देश देगा (उत्पत्ति 12:1)। अब्राहम द्वारा परमेश्वर की आज्ञा मानने और कनान देश में जाने पर, परमेश्वर और स्पष्ट हो गया: ''यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा'' (आयत 7)।

2. परमेश्वर ने अब्राहम के परिवार को एक शक्तिशाली लोग बनाना था। परमेश्वर ने केवल इतना कहा, ''मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा'' (12:2क)। यह केवल एक प्रतिज्ञा थी, क्योंकि परमेश्वर द्वारा यह प्रतिज्ञा किए जाने के समय अब्राहम की कोई शारीरिक संतान नहीं थी (11:30)।

3. परमेश्वर ने अब्राहम के नाम को बड़ा बनाना था (आयत 2)। इसका अर्थ लगता है कि परमेश्वर ने अब्राहम को बहुत ही प्रसिद्ध व्यक्ति बनाना था। यह प्रतिज्ञा निश्चित रूप से सही साबित हुई थी। उसका नाम पूरे संसार में और सदा के लिए प्रसिद्ध हो चुका है।

4. परमेश्वर ने अब्राहम की रक्षा करनी थी। ''जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा'' (12:3क)।

5. अब्राहम के द्वारा पृथ्वी के सब लोगों ने आशीष पानी थी (12:3)।

अपने भाग के लिए अब्राहम ने केवल परमेश्वर पर भरोसा रखना था और वही करना था जो उसने कहा था। आयत 1 में सम्भवतया अब्राहम के विश्वास के लिए सबसे बड़ी आरम्भिक चुनौती है: ''अपने देश और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा, जो मैं तुझे दिखाऊंगा।'' अब्राहम को न केवल अपने पिता के घर को छोड़ने के लिए कहा गया, बल्कि अपने परिवार के साथ (जो, हमें बाद में पता चलता है मूर्तिपूजक थे) सम्बन्ध भी तोड़ना था। ऐसा करके उसने सांसारिक सुरक्षा और सुविधा की हर बात को छोड़ना था। उसने कहां जाना था? ''उस देश में जो मैं तुझे दिखाऊंगा।'' इस समय तो उसे इतना ही मालूम था क्योंकि और कोई विवरण नहीं दिया गया था। उस देश के बारे में और जानने के लिए अब्राहम को परमेश्वर पर भरोसा रखना और वहां जाना आवश्यक था, जहां उसे भेजा गया। अब्राहम को इस बात का श्रेय जाता है 12:4क कहता है, ''यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राहम चला।''

पूरी बाइबल में परमेश्वर को वाचा बांधने वाला और वाचा मानने वाला दिखाया गया है। उसकी सृष्टि के लोग उसके वचन पर पूरा भरोसा रख सकते हैं। उन सब का जिक्र करने के लिए बाइबल में इसके बहुत उदाहरण दिए गए हैं, पर यहां केवल कुछ एक हैं। परमेश्वर ने जल प्रलय और इससे नूह के परिवार को बचाने के सम्बन्ध में नूह के साथ एक वाचा बांधी। फिर उसने पृथ्वी को दोबारा जल से कभी नष्ट न करने की प्रतिज्ञा की (उत्पत्ति 6:5-9:17)। बाद में उसने इस्राएलियों के साथ सीनै पर्वत पर उनका परमेश्वर होने की पेशकश करते हुए वाचा बांधी, यदि वे उसके लोग बनने को तैयार हैं। उसने उस प्रतिज्ञा के एक पहलू को कभी नहीं छोड़ा (निर्गमन 19; 20)। फिर यीशु आया; उसके द्वारा परमेश्वर ने पूरी मनुष्यजाति के साथ एक "नई वाचा" बांधी। अब वह यीशु में और क्रूस पर उसके बलिदान में विश्वास के द्वारा अनन्त उद्धार की प्रतिज्ञा करता है (लूका 22:20; इब्रानियों 9:11-22)। यीशु मसीह का सुसमाचार यही तो है: परमेश्वर के साथ वाचा के सम्बन्ध में प्रवेश करने की पुकार जिसने हमें बनाया और उसकी आशिषें पाने के लिए।

उद्धार अब्राहम की संतान के माध्यम से आएगा

परमेश्वर ने अब्राहम को "एक बड़ी जाति" बनाने की प्रतिज्ञा की, पर एक बहुत बड़ी समस्या थी कि अब्राहम बूढ़ा और निःसंतान था। निस्संदेह यह अब्राहम के लिए विश्वास करने का वाचा का सबसे कठिन भाग था। इसलिए यह प्रतिज्ञा विशेषकर उत्पत्ति 15:1-6 का केन्द्र है। परमेश्वर ने अब्राहम को पुनः आश्वस्त किया कि उसका "अत्यन्त बड़ा प्रतिफ़ल" होगा (आयत 1)। अब्राहम ने यह कहते हुए, "हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं, और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएजेर होगा? ... मुझे तो तू ने वंश नहीं दिया, और क्या देखता हूं कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा" (15:2, 3) कुछ संदेह से प्रतिक्रिया दी। परमेश्वर ने फिर अब्राहम को आश्वस्त किया कि उसका अपना बेटा उसका वारिस होगा और उसकी संतानें आकाश में तारों की तरह अनगिनत होंगी (15:4, 5)। संतानों की कमी नहीं होनी थी जिनके द्वारा परमेश्वर ने संसार को आशीष देनी थी।

फिर, आशीष एक चुने हुए व्यक्ति के द्वारा आनी थी। गलातियों 3:16 में पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया, जब उसने लिखा, "निदान, प्रतिज्ञाएं इब्राहिम को, और उसके वंश को दी गईं: वह यह नहीं कहता, कि वंशों को; जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि तेरे वंश को: और वह मसीह है" (गलातियों 3:16)। चालीस से अधिक पीढ़ियों के बाद यीशु ने अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा करने में युगों का मुख्य आकर्षण बनना था। इसका अर्थ यह है कि इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि नया नियम इन शब्दों के साथ आरम्भ होता है: "अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली" (मत्ती 1:1)।

यह विशेषकर यीशु के द्वारा ही होना था कि सब जातियों को आशीष मिले। उसने इस्राएल जाति (अब्राहम की शारीरिक संतान) के बाहर परमेश्वर की आशीष "भूमण्डल के सारे कुलों" के लिए लाई (उत्पत्ति 12:3)। उस प्रतिज्ञा का जारी रहना क्योंकि स्वर्ग में लौट जाने से थोड़ा पहले स्पष्ट किया गया, जब उसने अपने चेलों को निर्देश दिया "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो"

(मत्ती 28:19)। इसमें इब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा अन्तिम रूप में पूरी होनी थी: समस्त संसार ने वास्तव में उसकी संतान के द्वारा आशीष पानी थी।

उद्धार विश्वास पर आधारित होगा

उत्पत्ति 12:1-4 में परमेश्वर ने अब्राहम को उसकी प्रतिज्ञाओं को विश्वास करने, सांसारिक शिक्षा को त्यागने और बिना परिणाम पर आज्ञा को मानने की चुनौती दी। उसने कनान की सुन्दरता का वर्णन करते विवर्णिका या वहां सम्पत्ति होने का विवरण पत्र नहीं दिया। उसने केवल अपने आप और अपने वचन को दिया। प्रतिज्ञा मिलने पर अब्राहम को एक मज़ाक भरी बात का सामना करना पड़ा कि बूढ़ा आदमी जो ''मरे हुए के समान'' था उसे एक बड़ी जाति का पिता बनने के सम्बन्ध में था (इब्रानियों 11:12; रोमियों 4:19)। तौभी उत्पत्ति 15:6 कहता है कि अब्राहम ने ''यहोवा पर विश्वास किया।'' उसने उस में शारीरिक प्रमाण के बावजूद जो इसमें सुझाव देता था, उसमें और अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की उसकी योग्यता को साबित किया।

बाद में उस विश्वास की बहुत बड़ी परीक्षा हुई। उत्पत्ति 22 लिखता है कि परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पुत्र इसहाक को, वही पुत्र जिसके द्वारा प्रतिज्ञाएं पूरी होनी थीं, मौरिया पहाड़ पर ले जाकर वहां उसे बलिदान करने को कहा। अब्राहम ऐसा कर देता, यदि परमेश्वर हस्तक्षेप न करता और अब्राहम को न बताता कि वह विश्वास की परीक्षा में सफल हो गया है। अब उसने अपने विश्वास को पूरे दर्जे तक दिखा दिया था। हम हैरान हो सकते हैं कि अब्राहम ने इसहाक को बलिदान करने की बात कैसे सोची होगी। आखिर क्या यह वंशजों की ''एक जाति'' परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विपरीत काम नहीं होना था? आज्ञा न मानने में अब्राहम के लिए अपनी बात का तर्क देना आसान होता, पर उसने तर्क नहीं दिया, और बाइबल आगे बताती है कि क्यों नहीं दिया:

> विश्वास ही से अब्राहम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। और जिससे यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा; वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। *क्योंकि उसने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से जिलाए,* सो उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला (इब्रानियों 11:17-19)।

अब्राहम अपने पुत्र को भेंट करने के विश्वास को कैसे इकट्ठा कर पाया? परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और उसकी सामर्थ में इतना भरोसा रखकर ही उसने निष्कर्ष निकाला कि यदि वह बलिदान कर दे, परमेश्वर अवश्य इसहाक को मरे हुओं में से जिलाने की योजना बना रहा होगा। बेशक अब्राहम डगमगाया और उसका विश्वास डोल गया, पर वह परमेश्वर में भरोसे की ओर वापस आ जाता था, जिसने उसे बुलाया था और जिसने उसे अपना पूर्ण वचन दिया था। इसका अर्थ यह हुआ कि इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि जब पौलुस ने पूर्ण विश्वासी का उदाहरण दिया तो उसने अब्राहम का नाम लिया:

> ... न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने को भी सामर्थी है। इस कारण, यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया। और

यह वचन कि विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया, न केवल उसी के लिए लिखा गया। वरन हमारे लिए भी जिन के लिए विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा, अर्थात हमारे लिए जो उस पर विश्वास करते हैं, जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। वह हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिए जिलाया भी गया (रोमियों 4:20–25; देखें आयतें 1–3, 11, 12)।

सारांश

अब्राहम के साथ परमेश्वर की भेंट से कुछ प्राचीन नियम ठहराए गए कि उद्धार कैसे आएगा और कैसे काम करेगा। आज हमें अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा के दृष्टिकोण से देखने के योग्य होने की आशीष मिली है: यीशु का आना, समस्त संसार के पापों के लिए उसकी मृत्यु और उसका जी उठना है। जो कुछ परमेश्वर ने अब्राहम को बताया था आज वह किसी भी तरह से उससे कम नहीं है, जब परमेश्वर ने इसे पहले बताया था: उद्धार हमें परमेश्वर की बड़ी सावधानी पूर्वक अमल में लाई गई योजना के द्वारा मिला है। यह एक नई वाचा पर आधारित था जिसमें उस वाचा से भी बड़ी प्रतिज्ञाएं और आशिषें हैं (देखें इब्रानियों 8:6, 7; 9:15)। यह उद्धार हम तक यीशु के द्वारा लाया गया है जो "अब्राहम की संतान" है और इसकी पूर्ण सफलता हमारे इसे मानने की इच्छा पर निर्भर है। विश्वास से आइए परमेश्वर पर भरोसा रखें, उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करें और उसके वचन के आज्ञापालन के द्वारा अपने जीवनों को उसे सौंप दें।

नये नियम में अब्राहम

संसार के छुटकारे के लिए बनाई गई ईश्वरीय योजना में अब्राहम इतना महत्वपूर्ण है कि उसका उल्लेख बार–बार न केवल पुराने नियम में बल्कि नये नियम में भी उन्नतालीस बार है। अब्राहम नये नियम में कई तरह से कार्य करता है:

1. पुराने और नये नियम में परमेश्वर के बीच निरन्तरता और पहचान को दिखाना। पुराने नियम की तरह ही नये नियम में परमेश्वर को "अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर" के रूप में दिखाया गया है (प्रेरितों 3:13; देखें मत्ती 22:32; लूका 1:55)।

2. परमेश्वर की विश्वास योग्यता को दिखाना। जिस प्रकार उसने अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा किया, वैसे ही आज वह अपने लोगों के साथ करता है (लूका 1:73; प्रेरितों 3:25, 26; इब्रानियों 6:13)।

3. इस बात की पुष्टि के लिए कि यीशु वास्तव में अब्राहम का "वंश" अर्थात वह वंश था जिसके द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल और समस्त संसार के लिए अपनी सभी योजनाओं को पूरा करना था (मत्ती 1:1; गलातियों 3:14–16)।

4. यह ज़ोर देना कि उद्धार कामों के द्वारा कमाई करने से नहीं, बल्कि विश्वास के द्वारा परमेश्वर के दान के रूप में मिलता है (रोमियों 4; गलातियों 3:14–29)।

5. यह सिखाना कि शारीरिक संतान नहीं, बल्कि विश्वास से व्यक्ति अब्राहम की असली संतान बनता है (यूहन्ना 8:33–45; रोमियों 9:7)।

6. परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में पूर्ण भरोसे के उदाहरण के रूप में काम करना, जो विश्वास का सार है और विश्वास का वास्तविक स्वभाव दिखाना कि इसमें परमेश्वर को परमेश्वर मान लेना ही नहीं बल्कि सक्रिय रूप से उसका आज्ञापालन शामिल है (इब्रानियों 11:8–12, 17–19; याकूब 2:21–23; देखें मत्ती 3:9)।

7. स्वर्ग के आनन्दों को समझाने के लिए, जहां विश्वासी लोग अब्राहम और विश्वास के अन्य महान नायकों के साथ होंगे (मत्ती 8:11; लूका 13:28; 16:22, 23)।